



**VedaEchoes**

@vedaechoesji

16 Tweets • 2021-07-19 16:06:22 UTC • [See on Twitter](#)

rattibha.com 

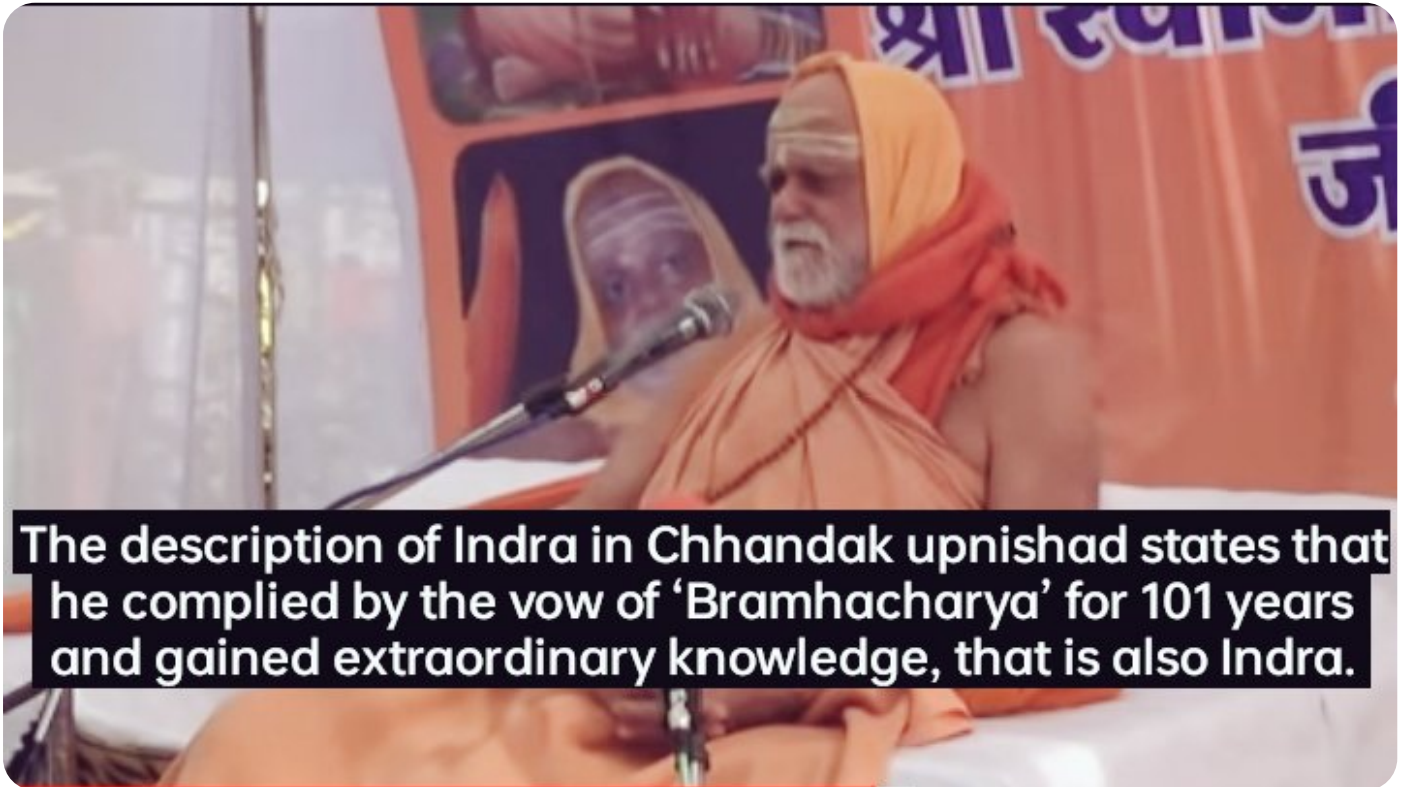
✨ Indra and Ahilya ✨

I'm going to cover the Vedic perspective+ I will cover historical aspect also.

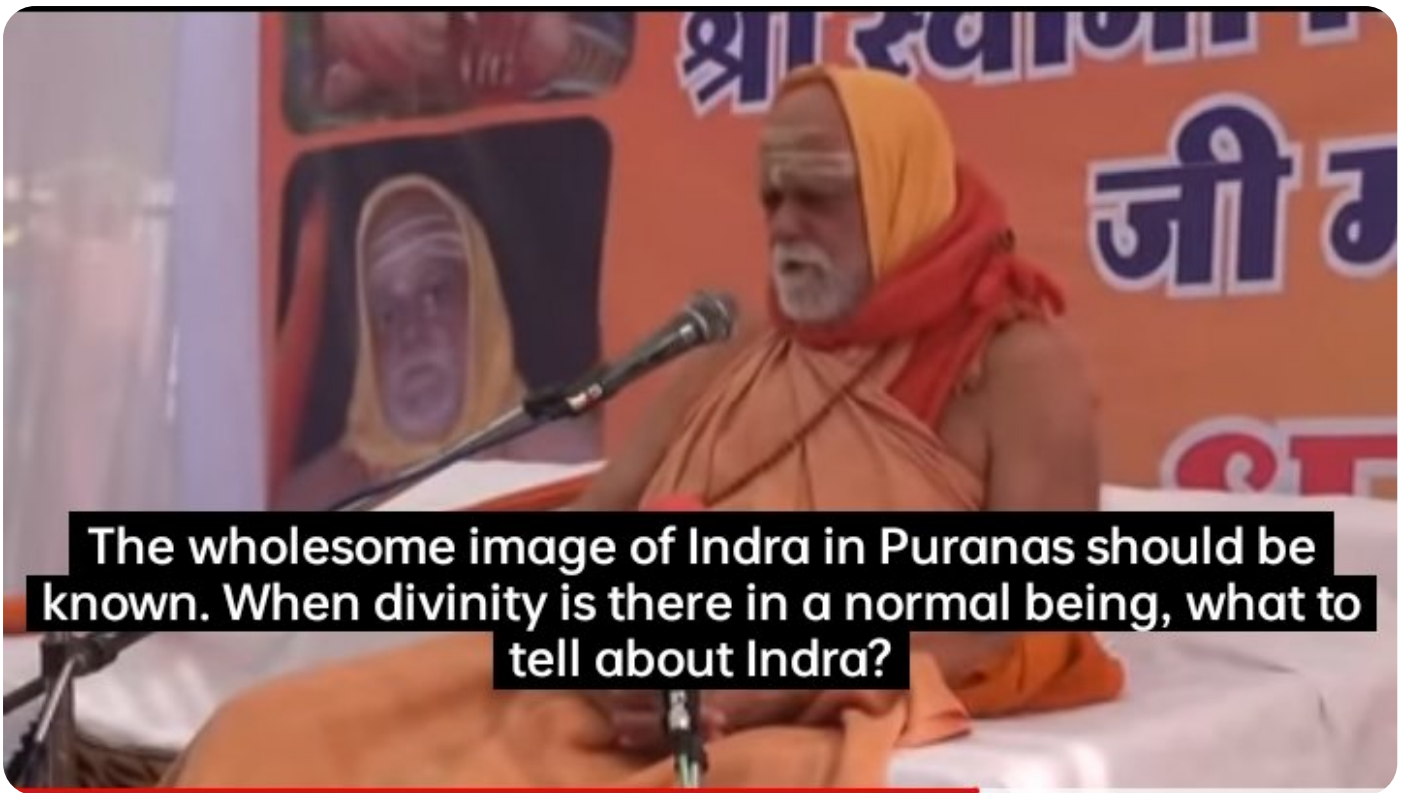




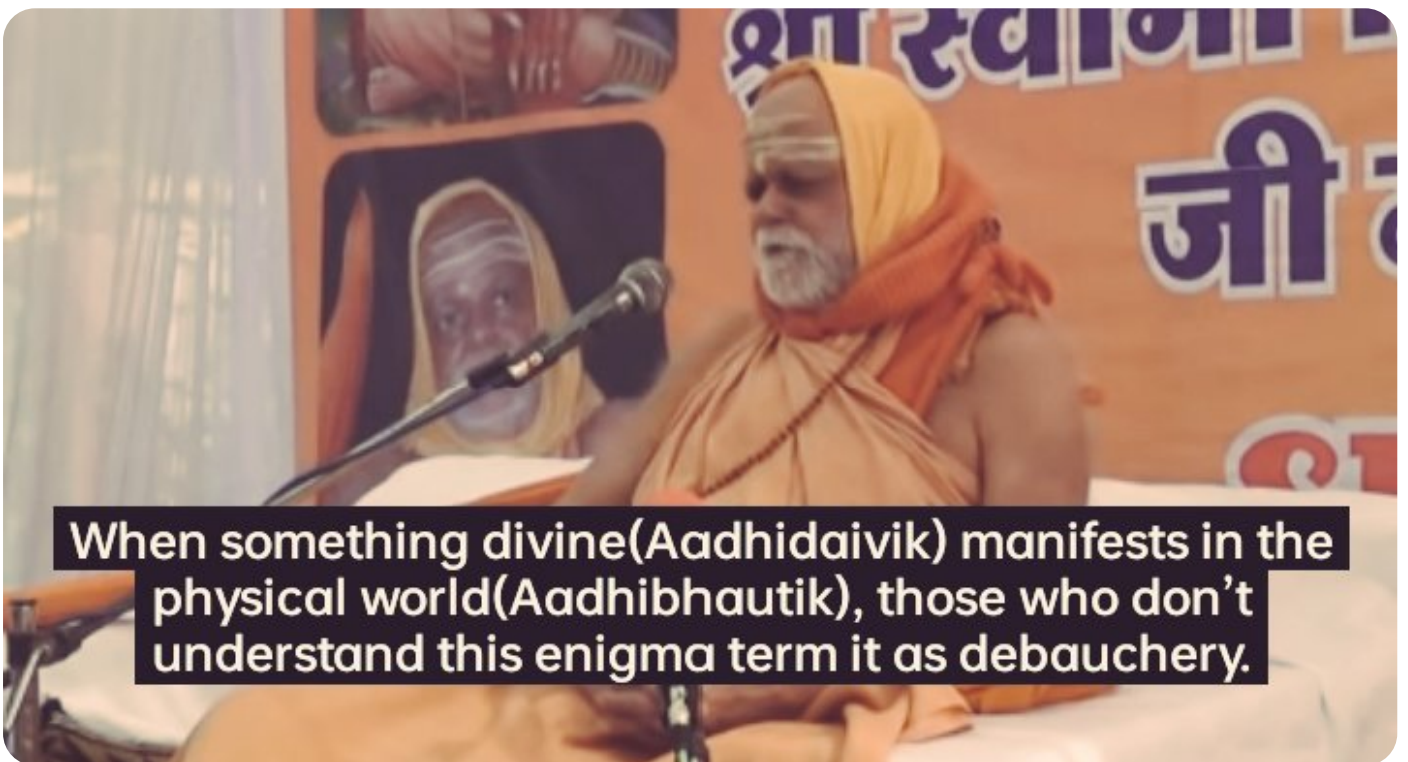
This story comes in Valmiki Ramayana,Devi Bhagvatam ,BrahmVaivarta that "Indra made physical relations with Devi ahilya(wife of महर्षि गौतम) . Hence Indra is called जार(lover, destroyer) of अहिल्या.



**The description of Indra in Chhandak upnishad states that he complied by the vow of 'Bramhacharya' for 101 years and gained extraordinary knowledge, that is also Indra.**



The wholesome image of Indra in Puranas should be known. When divinity is there in a normal being, what to tell about Indra?



When something divine(Aadhidaivik) manifests in the physical world(Aadhibhautik), those who don't understand this enigma term it as debauchery.

Indra is called the जार of ahalya in these sections of Vedas:-

अहल्यायै जारेति । अहल्याया ह मैत्रेय्या जार आस {ShādVimsa  
Brahmana 1.1}

अहल्यायै जारेति {Shatpath 3.3.4.18}

Kumaril Bhatt in his commentary of mimansa sutra 1.3.7 has written:-

अहर्लीयते यस्यां सा( Ahilya is the "night") and Indra means the sun, it comes from the root इर्दि  
परमैश्वर्ये{DP 1.65}

इन्द्र is the जार of अहिल्या means Sun destroys the night.

---

(2) The word “*Indra*”—proceeding from the root ‘*Idi*’ which signifies *great glory*—would signify *one possessed of a resplendent glory*; and as such it is taken as another name of the Sun; and he is the ‘*jāra*’—*destroyer* (*jarati-nāṣayati*)—of ‘*Ahalyā*’—(*ahani līyatē*) *that which disappears during the day, i.e., Night*; as it is only when the Sun rises that the darkness of night is destroyed; and it is in this sense that we should take the sentence—“*Indro’ halyāyā jārah,*”—which cannot be taken in its ordinary sense, of an illicit connection with a woman.

---

Shatpath brahmāna 4.5.9.4 calls सूर्य  as Indra.

अथ षष्ठेऽहन्व्यूहति । ग्रहान्व्यूहन्ति छन्दांसि तच्छुक्राग्रान्  
गृह्णात्यैन्द्रं वा एतत्षष्ठमहर्भवत्येष वै शुक्रो य एष तपत्येष उ  
एवेन्द्रस्तस्माच्छुक्राग्रान्गृह्णाति - ४.५.९.[४]

तं गृहीत्वा न सादयति । प्राणा वै ग्रहा नेत्प्राणान्मोहयानीति  
मोहयेद्ध प्राणान्यत्सादयेत्तं धारयन्त एवोपासतेऽथ ग्रहान्  
गृह्णात्यथ यदा ग्रहान्गृह्णात्यथ यत्रैवैतस्य कालस्तदेनं सादयति -  
४.५.९.[५]

In Nirukta{3.16, 3.3.4) सूर्य is clearly called the जार of रात्रि. You might be wandering what is the meaning of गौतम then? "उत्तमा गावो रश्मयो यस्य सः" That which has Excellent rays is Gautam. Here "चंद्रमा 😊 moon is Gautama".

{See the image right रश्मि means गो}



(२) इस मन्त्र में चित् उपमार्थ में प्रयुक्त है।

आ इत्याकार उपसर्गः पुरस्तादेव व्याख्यातः। अथाप्युपमाऽर्थे दृश्यते।

‘जार आ भगम्’ (ऋ० १०.११.६)।

जार इव भगम्। आदित्योऽत्र जार उच्यते। रात्रेर्जरयिता। स एव भासाम्।

आ इति आ यह आकारः आकार उपसर्गः उपसर्ग पुरस्तात् पहले (प्रथम अक्षर में) व्याख्यातम् व्याख्यायित कर दिया गया है। अथापि और अब (आगे वाले मन्त्र में) उपमार्थे उपमा के अर्थ में प्रयुक्त दृश्यते दिखलायी पड़ता है—

मन्त्रार्थ—‘आ जिस प्रकार जारः सूर्य भगम् भूमि में (स्थित रस को या अपने ज्योति को ऊपर ले जाता है उसी प्रकार तुम भी अपने माता-पिता को ऊपर सुख-धन मल जाजो)।’

व्याख्यार्थ—जार इव भगम् जिस प्रकार सूर्य पृथिवी में स्थित जल को। वह आदित्यः आदित्य को जारः उच्यते जार कहा गया है; क्योंकि वह रात्रेः रात्रि को जारयिता नाश करने वाला होता है। सः एव वह ही भासाम् ज्योतियों का (नक्षत्रादिके के प्रकाशों का) नाश करने वाला होता है।

विमर्श—

(१) जार—आदित्य वाचक जार का निर्वचन इस प्रकार है—

(क) ‘रात्रेर्जरयिता’ अर्थात् रात्रि को विनष्ट करने वाला होता है अतः सूर्य को जार कहा जाता है।

(ख) ‘स एव भासम्’ अर्थात् वही सूर्य ज्योतियों (= नक्षत्रादि के प्रकाशों) का विनाशक होता है अतः जार कहलाता है।

(२) इस मन्त्र की व्याख्या अगले मन्त्र को देकर और स्पष्ट की जा रही है।

तथापि निगमो भवति—

‘स्वसुर्जारः शृणोतु नः’ (ऋ० २.५५.४)।

उषसमस्य स्वसारमाह साहचर्याद्वा। रसहरणाद्वा। अपि स्वयं मनुष्यजार एवाभिप्रेतः स्यात्। स्त्रीभगस्तथा स्यात् भजतेः।

(‘जार’ शब्द के प्रयोग वाला) यह है



अथापि और भी अस्य इस (सूर्य) की एकः रश्मिः एक किरण चन्द्रमा में जाकर दीप्यते प्रकाशित होती है तत् इसी कारण एतेन वेदार्थ करने वाले उपेक्षितव्यम् जान लेना चाहिए। (क्योंकि) आदित्यतः आदित्य (सूर्य) से अस्य (चन्द्रमा) का दीप्तिर्भवति प्रकाश होता है। जैसे—‘सुषुम्णः सुषुम्णा सूर्यरश्मिः सूर्य की किरण (-विशेष) है चन्द्रमा चन्द्रमा गन्धर्वः गन्धर्व (उस सुषुम्णा को धारण करने वाला) है’।

विमर्श—

(१) मन्त्रार्थ जानने वाले को यह तथ्य ज्ञात होना चाहिए कि चन्द्रमा स्वयं प्रकाशमान नहीं है। वह तो सूर्य की सुषुम्णा नामक किरण से प्रकाशित होता है। इस प्रकार चन्द्रमा सूर्य की किरण को धारण करके प्रकाशित होता है।

सोऽपि गौरुच्यते—‘अत्राह गोरमन्यत’ इति तदुपरिष्ठाद् व्याख्यास्यामः।

सः अपि वह (सूर्य की सुषुम्णा नामक किरण) भी गौः उच्यते गौ कहीं जाती है। ‘अत्राह गोरमन्यत’ इति यह तत् उस (सुषुम्णा को गौः कहने के उदाहरण वाले मन्त्र) के उपरिष्ठात् बाद में (चौथे अध्याय में व्याख्यास्यामः व्याख्या करेंगे।

सर्वेऽपि रश्मयो गाव उच्यन्ते—

‘ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः।

अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमवभाति भूरि।।’ (ऋ० १.१५४.६)

सर्वे अपि सभी रश्मयः (सूर्य की) रश्मियाँ गावः उच्यन्ते गौ कहलाती हैं। जैसे—

मन्त्रार्थ—वाम् तुम दोनों (पति-पत्नी) को ता उन वास्तूनि घरों को गमध्यै गम करने के लिए उश्मसि हम चाहते हैं यत्र जहाँ (जिस घर में) भूरिशृङ्गा अत्यधिक प्रकाशमान गावः (सूर्य की) रश्मियाँ (किरणें) अयासः सञ्चरण करती हैं। अत्राह वहाँ (उन स्थानों में) उरुगायस्य अत्यन्त गतिमान् वृष्णः सूर्य का परमम् अत्युत्कृष्ट पद स्थान भूरि अत्यधिक अवभाति चमकता है।



So the meaning that has to be taken as "Son(Indra) is the Jaar(destroyer) of the Ahilya (night) { The wife on Chandra}.

Now come to the historical aspect. Ahilya is the manas Daughter of Brahma ji, Indra a Deva. Both do not fall under the rules of human beings.

कल्याण





देवराज इन्द्र

Whatever Indra did he did it for the well being of the Devas. See the image below from the बालकांड of Ramayana.

The Gautama had destroyed the Forest Dandakaranya the Devas were afraid. Just to make him angry (and to take the Curse). Anger+Curse destroys the Tapa. Indra did such



कुर्वता तपसो विघ्नं गौतमस्य महात्मनः ।

क्रोधमुत्पाद्य हि मया सुरकार्यमिदं कृतम् ॥ १-४९-२

2. mahaatmanaH gautamasya = for noble-souled sage Gautama; krodham utpaadya = on inciting fury; tapasaH vighnam kurvataa = effectuated hindrance to asceticism; mayaa = by me; idam surakaaryam kR^itam = done this god's deed - I have accomplished a task of gods; hi = indeed.

I have Indeed incited fury in that noble-souled Sage Gautama by effectuating hindrance in his asceticism, but I have accomplished a task of gods.  
[1-49-2]

Devi Ahilya knew he was Indra. She did it even after knowing he was Indra.{Balkanda 1.48.19-20}  
She is calling him as सुरश्रेष्ठ means she knew He was Indra. The verse 19 is more clear.



महाबलौ ॥ ८ ॥  
अतिथिके रूपमें आये हुए  
जोका विधिपूर्वक आतिथ्य-

ते: प्राप्य राघवौ।  
गमत्तुर्मिथिलां ततः ॥ ९ ॥  
र-सत्कार पाकर वे दोनों  
गत रहे और सबेरे उठकर  
॥ ९ ॥

कस्य पुरीं शुभाम्।  
मिथिलां समपूजयन् ॥ १० ॥  
जनकपुरीकी सुन्दर शोभा  
कहकर उसकी भूरि-भूरि

पं दृश्य राघवः।  
मनिपुंगवम् ॥ ११ ॥  
आश्रम था, जो  
देता था।  
मित्रजीसे

व्रदं मुनिर्वाजतम्।  
प्रायं पूर्व आश्रमम् ॥ १२ ॥  
स्थान है, जो देवनेमें तो  
मि मुनि यहाँ दृष्टि आचर नहीं  
हूँ कि पहले यह आश्रम

मं वाक्यविशारदः।  
मित्रो महामुनिः ॥ १३ ॥  
प्रश्न सुनकर प्रवक्तृशाल  
मित्रने इस प्रकार उत्तर

गु तत्त्वेन राघव  
कोपान्महात्मनः ॥ १४ ॥  
यह जिस महात्माक आश्रम

आश्रम था। उस  
पड़ता था। देवता भी इसकी पूजा एवं प्रशंसा किया  
करते थे ॥ १५ ॥

स चात्र तप आतिष्ठदहल्यासहितः पुरा।  
वर्षपूगान्यनेकानि राजपुत्र महायशः ॥ १६ ॥

‘महायशस्वी राजपुत्र! पूर्वकालमें महर्षि गौतम  
अपनी पत्नी अहल्याके साथ रहकर यहाँ तपस्या करते  
थे। उन्होंने बहुत वर्षोंतक यहाँ तप किया था ॥ १६ ॥

तस्यान्तरं विदित्वा च सहस्राक्षः शचीपतिः।  
मुनिवेषधरो भूत्वा अहल्यामिदमब्रवीत् ॥ १७ ॥

‘एक दिन जब महर्षि गौतम आश्रमपर नहीं थे,  
उपयुक्त अवसर समझकर शचीपति इन्द्र गौतम मुनिका  
वेष धारण किये वहाँ आये और अहल्यासे इस प्रकार  
बोले— ॥ १७ ॥

ऋतुकालं प्रतीक्षन्ते नार्थिनः सुसमाहिते।  
संगमं त्वहमिच्छामि त्वया सह सुमध्यमे ॥ १८ ॥

‘सदा सावधान रहनेवाली सुन्दरी! रतिकी इच्छा  
रखनेवाले प्रार्थी पुरुष ऋतुकालकी प्रतीक्षा नहीं करते हैं।  
सुन्दर कटिप्रदेशवाली सुन्दरी! मैं (इन्द्र) तुम्हारे साथ  
समागम करना चाहता हूँ ॥ १८ ॥

मुनिवेषं सहस्राक्षं विज्ञाय रघुनन्दन।  
रतिं त्वया दुर्बुद्धिं देवराजकतद्वलात् ॥ १९ ॥

‘रघुनन्दन! महर्षि गौतमका वेष धारण करके आये  
हुए इन्द्रको पहचानकर भी उस दुर्बुद्धि नारीने ‘अहो!  
देवराज इन्द्र मुझे चाहते हैं’ इस कौतूहलवश उनके साथ  
समागमका निश्चय करके वह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया ॥

अथाब्रवीत् सुरश्रेष्ठं कृतार्थेनान्तरात्मना।  
कृतार्थास्मि सुरश्रेष्ठ गच्छ शीघ्रमितः प्रभो ॥ २० ॥

आत्मनं मां च देवेण सर्वेण रथा गौतमात्।

‘रतिके पश्चात् उसने देवराज इन्द्रसे संतुष्टाच  
होकर कहा—‘सुरश्रेष्ठ! मैं आपके समागमसे कृतार्थ हो  
गयी। प्रभो! अब आप शीघ्र यहाँसे चले जाइये।  
देवेश्वर! महर्षि गौतमके कोपसे आप अपनी और मेरी  
भी सब प्रकारसे रक्षा कीजिये’ ॥ २० ॥

इन्द्र जब उस उ  
जानेकी आशङ्कासे बड़ी  
भागनेका प्रयत्न करने ल  
गौतमं स ददर्शत्

देवदानवदुर्धर्षं  
तीर्थोदकपरिविलिन्नं  
गृहीतसमिधं तत्र

‘इतनेहीमें उन्होंने  
लिये भी दुर्धर्ष, तपोब  
समिधा लिये आश्रममें  
तीर्थके जलसे भीगा हुआ  
समान उद्दीप्त हो रहे हैं  
दृष्ट्वा सुरपतिस्त्रस्तो  
अथ दृष्ट्वा सहस्रा  
दुर्वृत्तं वृत्तसम्पन्नो

‘उनपर दृष्टि प  
उठे। उनके मुखपर त  
मुनिका वेष धारण त  
गौतमजीने रोषमें भर  
मम रूपं समास्था  
अकतं यमिदं यस्मात्

‘दुर्मते! तूने  
करने गय पापकर्म  
इत्यार्षे  
इस प्रकार श्रीव

पितृ वताओंद्व  
अ  
अफलस  
अब्रवीत् ततः  
त्रस्तनय



Indra did many works by making him as Victim.

{i} Completed the work of the Devas {ended the  
tapa of Gautama}

(ii) Settled the Kamnas of Devi Ahilya after which  
she got cursed and at the end she met Bhagvan  
Rama.





Remember Devas are not free from कर्मफल. Indra does the karmas for लोकसंग्रह, In this incident he got cursed by maharshi Gautama. In other incident He got cursed for killing वृत्र.



Swananad Gajanana has described it in other way through व्युत्पत्ति.

अहिल्या as earth, गौतम as गोविज्ञान of कृषि, Indra as king.

Read the doc here

[https://docs.google.com/document/d/1\\_Xdqjl-71dbdo\\_EU3d38Uhee\\_iixreYf9IjElDiY614/edit?usp=drivesdk](https://docs.google.com/document/d/1_Xdqjl-71dbdo_EU3d38Uhee_iixreYf9IjElDiY614/edit?usp=drivesdk)

The thread about Brahma and Ma Saraswati

@thedivinetales @iDark\_Knightt

@Snaatanhindutva @HinduHistory108

@Hinduism\_Ebooks @SaffronVaibhav

@prachyam7

\*Chandogya Upanishad , subtitle has slight misspelling

@rattibha unroll 😊



The contents of these pages, including all images, videos, attachments and external links published (collectively referred to as "this publication"), were created at the request of a user (s) from Twitter. Rattibha provides an automated service, without human intervention, to copy the contents of tweets from Twitter and publish them in an article style, and create PDF pages that can be printed and shared, at the request of Twitter user (s). Please note that the views and all contents in this publication are those of the author and do not necessarily represent the views of Rattibha. Rattibha assumes no responsibility for any damage or breaches of any law resulting from the contents of this publication.